ग्रहाणां भोगकालः

मासं शुक्रबुधादित्यः , सार्धमासं तु मंगलः । त्रयोदश गुरुश्चैव , सपादद्विदिनं शशी ।। १

राहुः अष्टादशान्मासान् , त्रिंशन् मासान् शनैश्चरः । राहुवत् केतुः उक्तस्तु राशिभोगाः प्रकीर्तिताः ।।२

सूर्यः पञ्चदिनं शशी त्रिघटिका , भौमोऽष्टं वै वासरः, सप्ताहं ह्युशना बुधः त्रयदिनं मासद्वयं वै गुरूः।

षड्मासं रविजस्तथैव सततं , स्वर्भानुमासद्वये , केतोश्चैव तथा फलं परिमितं , ज्ञेयं ग्रहाणां फलम् ।।३

राशिप्रवेशे सूर्यारौ , मध्ये शुक्रबृहस्पती । राहुश्चन्द्रः शनिश्चान्ते सौम्यश्चैव सदा शुभः ।।४

सूर्य :- एक राशि का एक माह में भोग करते हैं एवं प्रथम पांच दिन फल प्रदान करते हैं।

चंद्र :- एक राशि को सवा दो दिन में भोग करते हैं एवं अन्त के ३ घटी फल देते हैं। (१ घंटा १२ मिनट)

मंगल :- एक राशि को ४५ दिन में भोग करते हैं एवं प्रथम आठ दिन फल प्रदान करते हैं।

बुध :- एक राशि १ मास में भोग करते हैं एवं प्रत्येक दिन फल देते हैं।

गुरु :- एक राशि को १३ मास में भोग करते हैं एवं मध्य के २ मास में फल प्रदान करते हैं।

शुक्र :- एक राशि को एक माह में भोग करते हैं एवं मध्य के सात दिन फल देते हैं।

शनि :- एक राशि को ३० मास में भोग करते हैं एवं अन्त के ६ मास में फल देते हैं।

राहु और केतु :- एक राशि को १८ मास में भोग करते हैं एवं अन्त के २ मास फल प्रदान करते हैं।

* जन्मकुंडली , गोचर कुंडली और दशा के आधार पर फलकथन करना चाहिए।

Maheta Jay Jagdishbhai (7405133327)

SHREE BRAHMANI JYOTISH

Gandhidham , Kutch

Ḱ